वीतरागतास्वरूप उत्तम मार्दव धर्म

मंगलाचरण–

उज्ज्वल हूँ कुन्द धवल हूँ प्रभु! पर से न लगा हूँ किंचित भी।
फिर भी अनुकूल लगे उन पर, करता अभिमान निरंतर ही।।
जड पर झुक झुक जाता चेतन, की मार्दव की खंडित काया।
निज शाश्वत अक्षयनिधि पाने, अब दास चरण रज में आया।।

उत्तम मार्दव धर्म की परिभाषा बतायें?	निश्चय से मृदु भावः मार्दवम् , व्यवहार से कोमलता का नाम मार्दव है।
मान कषाय के कारण मनुष्य अपने आप को कैसा मानता है?	मान कषाय के कारण मानी अपने को ऊंचा, दूसरों को नीचा रखता है। मान की पुष्टि के लिये छल कपट करता है। क्रोध करता है। मान नं. 2 की कषाय हैं क्रोध के विपरीत है। मानी महात्माओं को नमस्कार नही करने पर झगडते देखे जाते हैं।

मान कषाय के कारण जीव की स्थिति कैसी होती है?	मान कषाय की प्रवृति–जब इसके मान कषाय उत्पन्न होती है तब औंरों को नीचा व अपने को ऊंचा दिखाने की इच्छा होती है और उसके अर्थ अनेक उपाय सोचता है। अन्य की निन्दा करता है, अपनी प्रशंसा करता है व अनेक प्रकार से औरों की महिमा मिटाता है, अपनी महिमा करता है। महाकष्ट से जो धनादिक का संग्रह किया उसे विवाहादि में खर्च करता है तथा कर्ज लेकर भी खर्चता है। मरने के बाद हमारा यश रहेगा ऐसा विचारकर अपना मरण करके भी अपनी महिमा बढाता है। यदि कोई अपना सन्मादिक न करे तो उसे भयादिक दिखाकर दुख उत्पन्न करके अपना सन्मान कराता है। तथा मान होने पर कोई पूज्य–बडे हों उनका भी सन्मान नहीं करता, कुछ विचार नही रहता। यदि अन्य नीचा और स्वयं ऊंचा दिखाई न दे, तो अपने अंतरंग में आप बहुत संतापवान होता है और अपने अंगों का घात करता है तथा विष आदि से मर जाता है ऐसी अवस्था मान होने पर होती है। (मोक्षमार्ग प्रकाशक पृ.सं. 53)

क्रोध कषाय और मान कषाय में क्या अंतर है?

क्रोध में शत्रु बनते हैं मान में मित्र, निंदा शत्रु करते हैं, मित्र प्रशंसा करते हैं।
प्रतिकूलता में क्रोध और अनुकूलता में मान कषाय उत्पन्न होती है।
मान भी क्रोध के समान खतरनाक है।
क्रोध में वस्तु नष्ट करते हैं, तो मान में दबा कर रखते हैं।
क्रोधी एकांत चाहता है पर मानी भीड चाहता है।
क्रोधी वियोग चाहता है मानी संयोग चाहता है।
पर पदार्थो के ममत्व के कारण क्रोध और मान होता है। उदा. सेठ और मिल का

मान को मीठा जहर क्यों कहा?

क्योंकि मान कषाय के उदय में जीव अपनी प्रशंसा चाहता है एव स्वयं को उच्च और दूसरे की निन्दा करता है व नीचा समझता है वर्तमान में कुछ समय के लिये समाज में प्रतिष्ठा तो मिल जाती है मगर नीच गोत्र कर्म का बंध भी हुआ है इसका भान नही रहता, यह मान शहद लपेटी तलार के समान है क्योंकि परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य। त.सू.6/25 इसीलिये मान को एक मीठा जहर कहा है। उदा. मानपत्र का.... .
जिसकी पीठ पीछे प्रंशंसा हो वह भाग्यशाली है।
लेकिन प्रशंसा निंदा से अधिक खतरनाक है तर्क सहित .

मान कषाय के कितने भेद है?

मान के भेद–

ज्ञानं पूजां कुलं जातिं, बलंऋद्धि तपो वपुः।
अष्टावाश्रित्य मानित्वं स्मयमाहुर्गतस्मया।।

आठों मद (ज्ञान,पूजा,कुल,जाति बल, ऋद्धि, तप,शरीर) अज्ञानी को होते हैं ज्ञानी को नही।

ज्ञान का मद ज्ञानी को नही अज्ञानी को होता है।

मान का एक रूप दीनता के रूप भी हैं।

दीन आगे झुकता है मानी पीछे की ओर अकडता है।

जिसके पास रूपया,रूप,बल,ज्ञान आदि कुछ भी न हो दीन हो तो क्या वह मार्दवधर्म का धारी है, नही ये तो उसके पापकर्म का उदय है।

दशलक्षण पूजा का छंद–

मान महाविषरूप, करहिं नीच गति में ।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावे प्रानी सदा।।
उत्तम मार्दव गुन मन माना, मान करन कौ कौन ठिकाना।
बस्यो निगोद मांहि तैं आया, दमरी रूकन भाग बिकाया।।
रूकन बिकाया भाग बश तैं, देव इक इन्द्री भया।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीडों में गया।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करैं जल बुदबुदा।
करि विनय बहु गुन बडे जन की, ज्ञान का पावें उदा।।

पूजन के छंद का अर्थ–मान महा विष के समान है यह मान(नीच गति) संसार में नरक गति को करने वाला है, कोमलता (मृदुता) रूपी अनुपम अमृत को ग्रहण करने वाले जीव हमेशा सुख प्राप्त करते हैं।

उत्तम मार्दव गुण मन को अच्छा लगने वाला है, मान करने का क्या आधार है क्योंकि अनंत काल से निगोद में रहता था वहां से आकर स्थावर में वनस्पति काय का जीव हुआ, कभी दमरी(सबसे छोटी मुद्रा) के भाव बिक गया, कभी रूकन अर्थात् बिना मूल्य के ही बिक गया भाग्य उदय से यह जीव देव हुआ और देव पर्याय से आकर एकेन्द्रिय हो गया, उत्तम पर्याय से चांडाल हुआ, राजा भी कीडों में जाकर उत्पन्न हो गया। हे! आत्मा, इस जीवन की युवावस्था और धन का घमण्ड क्यों करता है। ये सब जल के बुल–बुले के समान होने वाले हैं। जिनमें बहुत गुण हैं अर्थात् गुणवान हैं, जिनकी बडी आयु है ऐसे माता–पिता आदि की विनय करना चाहिए जिससे ज्ञान की प्राप्ति होती है।

अभिमानी व ज्ञानमद के कुछ उदाहरण बताईये?

1.अभिमानी व्यक्ति ऐसा समझता है कि मैं ही सब कुछ करता हूँ , उदा. सेठ के 4 पुत्र कमांऊ,ज्वारी, अंधा, पुजारी।

2.नाविक, ज्ञानी पुरूष समुद्र मंत्रों का वेत्ता कुछ काम न आया, नदी में बह गया।

3.अपने को बडा समझने की इच्छा से बुरा भी कर लेते है, उदा. सुनार, सुनारिन, भुजबंद, घर में आग लगाना

मदों के कुछ उदाहरण बताईये?

▪बल मद–अभिमानी रावण ने 72 जिनालयों सहित कैलाश पर्वत उठाया तब मुनि बाली ने पैर का अंगूठा दबाया जिससे रावण भी र्पत के नीचे दब गया।

▪यौवन मद–रूपवान स्त्री पर एक साधु मोहित हो गया, स्त्री ने दूसरे दिन आने को कहा दूसरे दिन अपने रक्त से भरा कटोरा भिक्षा में दिया और कहा–

▪यौवन था तब रूप था, थे ग्राहक सब लोय।
यौवन रत्न गुमो पुनः, बात न पूछे कोय।।

वीतरागता उत्तम मार्दव धर्म – पं.कैलाश चन्द्र जैन शास्त्री

कुछ और उदाहरण बताईये?

4.मानी की टेक उदा. पति,पत्नी, सिर दर्द का बहाना,
पत्नी–अपनी टेक चलाई, पति की मूंछ मुंडाई।
पति–पीछे देख लुगाई मुंडन की पलटन आई।।

5.अपनी शान बनाये रखने में लगा रहता है, उदा. कोरे कागज की कविता– असली ही पढ सकता है।

नम्र व्यक्ति का स्वभाव कैसा होता है?

1.नम्रता का उदा. नदी गोदला घास, घमंडी रावण ठोस वृक्ष।

2.बडे बडाई न करै, बडे न बोले बोल।
हीरा मुख से न कहे, बडा हमारा मोल।।

- जैसे नदी में बडा पत्थर डालने पर पानी इधर उधर बहने लगता है वैसे ही जब आत्मा में मोह राग,द्वेष, मानादि उत्पन्न हो जाते हैं तो उपयोग इधर उधर भटकने लगता है।
- जैसे बैलगाडी के नीचे चलने वाला कुत्ता समझता है कि गाडी मैं चला रहा हूॅ, वक्से ही संसारी जन समझते हैं कि परिवार का भरण पोषण में कर रहा हूॅ, बच्चों को मैंने पदाया तो सभी एक से क्यों नही पढे।

कुछ और उदाहरणों से नम्र व्यक्ति का स्वभाव कैसा होता है?

3.नम्र स्वभाव वाला मनुष्य फल से लदे हुये वृक्ष के समान होता है जैसे शाखा फलों के भार से झुक जाती है वैसे ही मनुष्य क्षमादिगुणों के भार से विनयशील हो जाता है

कहते भी है विनय बिना विद्या नही.......

4.विनय के बिना विद्या की प्राप्ति नही, उदा.पं. जी, 10–12 बच्चे,आम या फोडा को चूसना।

5.समुद्र विशाल जल का भण्डार होते हुये भी अपनी सीमा का उलंघन नही करना, वैसे ही गुणवान पुरूष भी अपनी मर्यादा का उलंघन नही करता।

- मान कषाय से अपमान की प्राप्ति।
- जैसे आंगन में बेल पल्लवित होकर पूरे आंगन में छा जाती है वैसे ही आत्मा में मार्दव धर्म फैलकर संसार में यश दिलाती है।

- विनयहीन व्यक्ति की विद्या व्यर्थ–

अविनीतस्य या विद्या, सा चिरं नैव तिष्ठति।
मर्कटस्य गले बद्धा, मल्लीनां मालिका यथा।।

विनयहीन व्यक्ति की विद्या बन्दर के गले में पडी हुई मालती की माला के समानदीर्घ काल तक नही ठहरती है।

- मार्दव भाव दया का मूलक है।
- मान कलह का कारण है।

रावण का मान क्या था ?

वचन की कठोरता व कोमलता का उदा. बतायें?

हमारी स्थिति कैसी है?

रावण का मान–

जानि है कायर मुझे नृपगण सभी संग्राम से।
तासे लडना है मुझे धुन बांध के अब राम से।
जीतकर अरपूं सिया प्यारी जु उनके प्राण से।
यश होय मेरा विश्व में बेशक सिया के दान से।

वचन की कठोरता–शुष्कः वृक्षः तिष्ठत्यग्रे ।
व कोमलता–नीरस तरूवर विलसति पुरूतः।
दोंनों का अर्थ एक ही है

पढ पढ शास्त्र अनेकों फाडे, तोडी कई मालायें।
क्रोध मान घिसा न मन का घिस डाली प्रतिमायें।।

(2) उत्तम मार्दवः– क्षमा के समान उत्तम मार्दव भी आत्मा का स्वभाव है, मार्दव धर्म की प्रकटता से प्राणी का जीवन बाह्य में विनम्र एवं कोमल स्वभाव वाला होता है। आत्मा में मार्दव स्वभाव का गुण है, उस मार्दव स्वभावी आत्मा के अवलम्बन से आत्मा में मान कषाय के अभाव रूप शांति स्वरूप जो पर्याय प्रकट होती है उसे मार्दव कहते है। बाह्य में ''मृदोर्भावं मार्दवं ''अर्थात् मृदुता –कोमलता का नाम मार्दव है मान कषाय के कारण आत्म स्वभाव में विद्यमान कोमलता का अभाव हो जाता है, उसमें अकड सी उत्पन्न हो जाती है, जब यह मान कषाय अपना प्रभाव दिखाती है, तब यह जीव अपने को बडा और दूसरे को छोटा समझने लगता है अपने को ऊंचा दूसरों को नीचा दिखाता है घमण्ड करता है, मान सम्मान की चाह करता है अपनी प्रशंसा चाहता है। यह मान आठ कारणों से होता है। ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप और शरीर इन आठ भावों के आश्रय से मान किया जाता है। मान कषाय के कारण रावण भी राम के द्वारा सपरिवार नष्ट हुआ। मान एक मीठा जहर है जो धीरे–धीरे चढता है और समूल नष्ट कर देता है। अतः मान कषाय के अभाव में पर को ''अपना '' मानना छोडना भी पडता है। वर्तमान में धन के मद में अन्याय अत्याचार हो रहे है इससे अपने मार्दव स्वभावी आत्मा का पतन होता है। इसलिए कहा है

मान महा विषरूप, करहिं नीच गति जगत में।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावें प्राणी सदा ।।

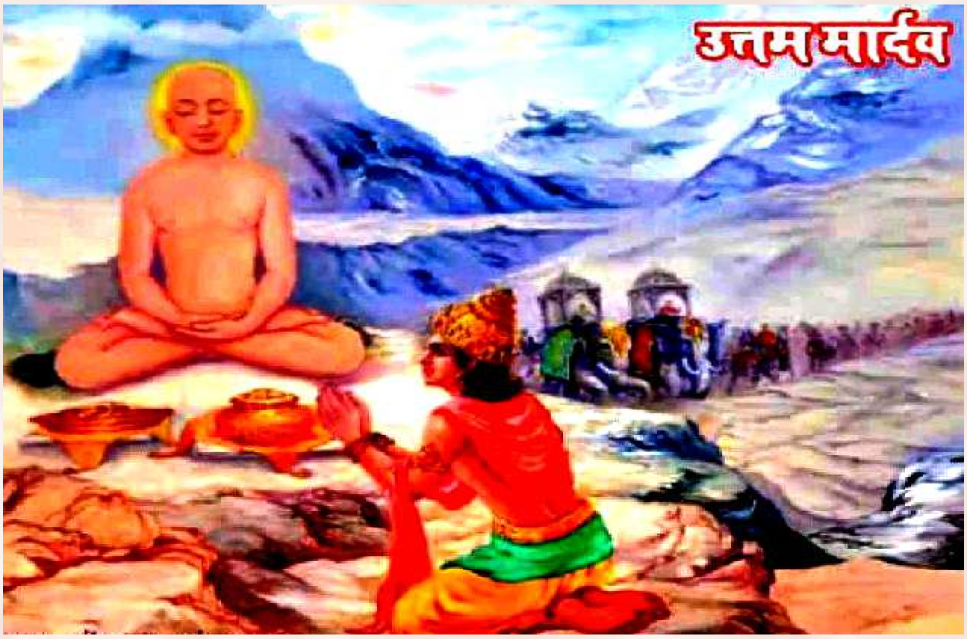

जय जिनेंद्र

पं.कैलाश चन्द्र जैन शास्त्री
जैनदर्शनाचार्य,से.नि. सहा.निदेशक
14/214 मुक्ताप्रसाद नगर
बीकानेर राज.9460674306